माध्यमिक शिक्षा परिषद उ0प्र0 बोर्ड द्वारा प्रस्तावित
2024-25 परीक्षा हेतु प्रश्न-पत्र
सामाजिक विज्ञान
कक्षा : 10
मॉडल पेपर - 2

समय : तीन घण्टे 15 मिनट **पूर्णांक : 70**

नोट: प्रारम्भ के 15 मिनट परीक्षार्थियों को प्रश्नपत्र पढ़ने के लिए निर्धारित हैं।

निर्देश :

(i) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) इस प्रश्नपत्र के **दो** खण्ड, **खण्ड – अ** तथा **खण्ड –ब** हैं।
(iii) **खण्ड – अ** में **1** अंक के **20** बहुविकल्पीय प्रश्न हैं जिनके उत्तर **ओ.एम.आर.** उत्तर पत्रक पर देने हैं।
(iv) **खण्ड – अ** के प्रत्येक प्रश्न का निर्देश पढ़कर केवल प्रदत्त **ओ.एम.आर.** उत्तर पत्रक पर ही उत्तर दें। **ओ.एम.आर.** उत्तर पत्रक पर उत्तर देने के पश्चात उसे नहीं काटें तथा इरेजर अथवा ह्वाइटनर का प्रयोग न करें।
(v) प्रश्न के अंक उसके सम्मुख अंकित हैं।
(vi) **खण्ड – ब** में **50** अंक के वर्णनात्मक प्रश्न हैं। इस खण्ड में वर्णनात्मक-I, वर्णनात्मक-II तथा मानचित्र सम्बन्धी दो प्रश्न हैं।
(vii) **खण्ड – ब** में सभी प्रश्नों के उत्तर एक साथ ही करें।
(viii) प्रथम प्रश्न से आरम्भ कीजिए तथा अन्तिम प्रश्न तक करते जाइए। जो प्रश्न न आता हो उस पर समय नष्ट न कीजिए।
(ix) दिए गए मानचित्रों को उत्तर-पुस्तिका के साथ मजबूती से संलग्न करना आवश्यक है।
(x) दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिए मानचित्र कार्य के स्थान पर अलग से प्रश्न 9(A) तथा 9(B) लिखने के लिए दिए गये हैं।

खण्ड–अ
(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

निर्देश: नीचे दिए गए प्रश्नों के प्रत्येक प्रश्न के चार विकल्प दिए गए हैं। सही विकल्प चुनकर उसे **OMR** उत्तर पत्रक पर चिह्नित करें:

1. फ्रांस की क्रान्ति कब प्रारंभ हुई? **1**
(a) 1848 (b) 1817
(c) 1789 (d) 1615

2. आर्थिक महामंदी का प्रारम्भ कब से हुआ? **1**
(a) 1928 (b) 1929
(c) 1930 (d) 1932

3. 'हिन्द स्वराज' पुस्तक के लेखक कौन हैं? **1**
(a) जवाहर लाल नेहरू (b) महात्मा गाँधी
(c) विनोबा भावे (d) बाल गंगाधर तिलक

4. जर्मनी के एकीकरण में मुख्य भूमिका किसकी थी? **1**
(a) ज्युसेपे गैरीबाल्डी (b) नेपोलियन बोनापार्ट
(c) ऑटो वॉन बिस्मार्क (d) विलियम प्रथम

5. 'जब फ्रांस छींकता है, तो बाकी यूरोप को सर्दी जुकाम हो जाता है' किसका कथन है? **1**
(a) मेटरनिख (b) नेपोलियन
(c) लुई फिलिप (d) चर्चिल

6. बेल्जियम की सामुदायिक सरकार में निम्नलिखित में से किसके मध्य सत्ता में साझेदारी हैं? **1**
(a) विभिन्न सामाजिक समूहों के मध्य
(b) शासन के विभिन्न अंगों के मध्य
(c) केन्द्रीय और राज्य सरकारों के मध्य
(d) राज्य सरकार एवं सामुदायिक सररकार के मध्य

7. विश्व का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है : **1**
(a) भारत (b) यू.एस.ए.
(c) ग्रेट ब्रिटेन (d) रूस

8. भारतीय संघ में कितने राज्य हैं? **1**
(a) 26 (b) 27
(c) 28 (d) 29

9. लोकतंत्र में शक्ति का स्त्रोत है : **1**
(a) जनता (b) संसद
(c) प्रधान मंत्री (d) राष्ट्रपति

10. भारत में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा कौन-सी है? **1**
(a) पंजाबी (b) कश्मीरी
(c) हिन्दी (d) उर्दू

11. प्रति व्यक्ति आय को अन्य किस नाम से जाना जाता है? **1**
(a) औसत आय
(b) राष्ट्रीय आय
(c) व्यक्तिगत आय
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

12. लैटेराइट मिट्टी निम्नलिखित में से किस राज्य में पाई जाती है? **1**
(a) राजस्थान (b) हिमाचल प्रदेश
(c) महाराष्ट्र (d) उत्तर प्रदेश

13. सेवाओं को किस क्रियाकलाप क्षेत्रक के अन्तर्गत रखा जाता है? 1

(a) तृतीयक क्षेत्रक (b) प्राथमिक क्षेत्रक
(c) द्वितीयक क्षेत्रक (d) सूचना प्रौद्योगिकी

14. निम्नलिखित में से कौन-सा खनिज अधात्विक है? 1

(a) मैंगनीज़ (b) अभ्रक
(c) बॉक्साइट (d) जस्ता

15. राष्ट्रीय उपभोक्ता अधिकार दिवस कब मनाया जाता है? 1

(a) 5 अप्रैल (b) 22 फरवरी
(c) 24 नवम्बर (d) 24 दिसम्बर

16. निम्नलिखित में से किस राज्य में अधिकतम साक्षरता दर पाई जाती है? 1

(a) बिहार (b) पश्चिम बंगाल
(c) केरल (d) मध्य प्रदेश

17. एजेण्डा-21 का संबंध किससे है? 1

(a) ओजोन क्षरण से
(b) वैश्विक तापन से
(c) जलवायु परिवर्तन से
(d) सततपोषणीय (संधारणीय) विकास से

18. सूचना का अधिकार अधिनियम कब लागू किया गया? 1

(a) 2005 (b) 2010
(c) 1999 (d) 2001

19. निम्नलिखित में से कौन-सी फसल मुख्य रूप से ज़ायद फ़सल का उदाहरण है? 1

(a) धान (b) गेहूँ
(c) चना (d) तरबूज़

20. निम्नलिखित में से कौन-सा व्यक्ति असंगठित क्षेत्रक के अन्तर्गत आता है? 1

(a) कृषि मज़दूर (b) बैंक मैनेजर
(c) राजपत्रित अधिकारी (d) सैनिक

खण्ड – ब

(वर्णनात्मक - I)

(निम्न प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक लगभग 80 शब्दों में दीजिए।)

1. भारतीय अर्थव्यवस्था पर आर्थिक महामंदी के पड़ने वाले प्रभावों का वर्णन कीजिए। 4

अथवा

जोसेफ मेज़िनी (मेत्सिनी) के विचारों पर प्रकाश डालिए। 4

2. भारत में संघीय शासन की किन्हीं दो विशेषताओं की विवेचना कीजिए। 2+2

अथवा

क्या भारतीय संघ एक अर्ध-संघीय ढाँचा है? आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। 4

3. ''संसाधनों के अंधाधुंध प्रयोग ने अनेक समस्याएँ पैदा कर दी हैं।'' समीक्षा कीजिए। 4

अथवा

वाणिज्यिक कृषि की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 4

4. आर्थिक गतिविधियों को रोजगार की परिस्थितियों के आधार पर कैसे वर्गीकृत की जाती हैं? 4

अथवा

उपभोक्ता जागरूकता हेतु कोई चार उपाय सुझाइए।

(वर्णनात्मक - II)

(निम्न प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक लगभग 150 शब्दों में दीजिए।)

5. 'लोकतंत्र' से आप क्या समझते हैं? इसे उत्तरदायी, जिम्मेवार एवं वैध शासन क्यों माना जाता है? 2+4

अथवा

प्रौद्योगिकी ने वैश्वीकरण की प्रक्रिया को किस प्रकार उत्प्रेरित किया है? उदाहरणों सहित स्पष्ट कीजिए। 6

6. ''भारत में कभी-कभी चुनाव जातियों पर ही निर्भर करते हैं।'' क्यों? इस स्थिति से छुटकारा पाने के सुझाव दीजिए। 3+3

अथवा

भारत में स्थानीय स्वशासन से आप क्या समझते हैं? इस शासन के किन्हीं दो गुणों एवं किन्हीं दो दोषों का उल्लेख कीजिए। 2+2+2

7. मृदा अपरदन क्या है? भारत में प्रचलित मृदा अपरदन के प्रमुख प्रकारों का वर्णन कीजिए। 3+3

अथवा

भू-संसाधन से क्या तात्पर्य है? भारत के भू-उपयोग में आवश्यक परिवर्तनों हेतु कोई चार उपाय सुझाइए। 2+4

8. वैश्वीकरण किसे कहते हैं? वैश्वीकरण को सम्भव बनाने वाले कारकों की विवेचना कीजिए। 2+4

अथवा

संगठित एवं असंगठित क्षेत्रकों में विभेद कीजिए एवं असंगठित क्षेत्रक के कर्मचारियों की समस्याओं पर प्रकाश डालिए। 2+4

(मानचित्र सम्बन्धी प्रश्न)

निर्देश: प्रश्न संख्या 9(A) तथा 9(B) मानचित्र से संबंधित है।

9 (A). निम्नलिखित स्थानों को भारत के दिये गये रेखा मानचित्र में ⊙ चिह्न द्वारा नाम सहित दर्शाइए। सही नाम तथा सही अंकन के लिये $\frac{1}{2}, \frac{1}{2}$ अंक निर्धारित हैं:

(i) वह स्थान जहाँ नील की खेती करने वाले किसानों का आंदोलन हुआ था। $\frac{1}{2}+\frac{1}{2}$

(ii) वह स्थान जहाँ नील की खेती करने वाले किसानों ने सत्याग्रह आंदोलन किया था। $\frac{1}{2}+\frac{1}{2}$

(iii) वह स्थान जहाँ पर काँग्रेस के अधिवेशन में 'पूर्ण स्वराज' की माँग की गई थी। $\frac{1}{2}+\frac{1}{2}$

(iv) वह स्थान जहाँ पर सूती मिल श्रमिकों ने सत्याग्रह आंदोलन किया था। $\frac{1}{2}+\frac{1}{2}$

(v) वह स्थान जहाँ दिसम्बर 1920 में काँग्रेस का अधिवेशन हुआ था। $\frac{1}{2}+\frac{1}{2}$

9.(B). निर्देश: दिये गये भारत के मानचित्र में निम्नलिखित को दर्शाइए:

(i) गेहूँ का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य ⊙ चिन्ह द्वारा नाम सहित। $\frac{1}{2}+\frac{1}{2}$

(ii) कपास उत्पादन का एक प्रमुख क्षेत्र ▨ चिह्न द्वारा नाम सहित। $\frac{1}{2}+\frac{1}{2}$

(iii) मूँगफली का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य ○ चिन्ह द्वारा नाम सहित। $\frac{1}{2}+\frac{1}{2}$

(iv) एक परमाणु ऊर्जा केन्द्र ⊕ चिह्न द्वारा नाम सहित। $\frac{1}{2}+\frac{1}{2}$

(v) खनिज तेल का सबसे ज्यादा उत्पादन वाला राज्य (y) चिन्ह द्वारा नाम सहित। $\frac{1}{2}+\frac{1}{2}$

(केवल दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिये मानचित्र कार्य के विकल्प के रूप में)

9(A). निर्देश: निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए। मानचित्र का प्रयोग न कीजिए।

(i) किस स्थान पर नील की खेती करने वाले किसानों का आंदोलन हुआ था? **1**

(ii) नील की खेती करने वाले किसानों ने कहाँ पर सत्याग्रह आंदोलन किया था? **1**

(iii) किस स्थान पर काँग्रेस के अधिवेशन में 'पूर्ण स्वराज' की माँग सर्वप्रथम की गई थी? **1**

(iv) सूती मिल श्रमिकों ने कहाँ पर सत्याग्रह किया था। **1**

(v) किस स्थान पर दिसम्बर 1920 में काँग्रेस का अधिवेशन हुआ था? **1**

9(B). निर्देश : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए। मानचित्र का प्रयोग न कीजिए।

(i) गेहूँ के सबसे बड़े उत्पादक राज्य का नाम लिखिए। **1**

(ii) कपास के एक प्रमुख उत्पादक क्षेत्र का नाम लिखिए। **1**

(iii) मूँगफली के सबसे बड़े उत्पादक राज्य का नाम लिखिए। **1**

(iv) एक परमाणु ऊर्जा केन्द्र का नाम लिखिए। **1**

(v) खनिज तेल का सबसे ज्यादा उत्पादन किस राज्य में होता है, नाम लिखिए। **1**

प्रश्न-पत्र हल

खण्ड अ

(वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

1. (c)
2. (b) :
3. (b) :
4. (c) :
5. (a) :
6. (c) :
7. (a) :
8. (c) :
9. (a) :
10. (c) :
11. (a) :
12. (c) :
13. (a) :
14. (b) :
15. (d) :
16. (c) :
17. (d) :
18. (a) :
19. (d) :
20. (a) :

खण्ड – ब

(वर्णनात्मक - I)

1. बाजार की वह स्थिति जब बाजार वस्तुओं से भरा हो लेकिन उपभोक्ता (खरीददार) पैसों की कमी या किसी अन्य कारणों के चलते वस्तुओं का क्रय न करें और ऐसी स्थिति जब लम्बे समय तक अर्थव्यवस्था में बनी रहे तो मंदी की स्थिति उत्पन्न होती है।

औद्योगिक क्रांति के दौरान एवं प्रथम विश्व युद्ध के पहले बड़े पैमाने पर अमेरिका तथा यूरोप द्वारा आर्थिक उत्पादन किया गया लेकिन प्रथम विश्व युद्ध के बाद आर्थिक नुकसान ने भयंकर आर्थिक संकट पैदा किया, जो देखते-देखते महामंदी में परिवर्तित हो गया।

महामंदी का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

(1) भारत का आयात-निर्यात व्यापार घटकर आधा हो गया

(2) भारतीय किसानों को भारी नुकसान उठाना पड़ा

(3) कारखाने बन्द हो गये तथा कृषि और उससे सम्बद्ध लोग बेरोजगार हो गए

(4) भारतीय किसानों के कच्चे माल के खरीददार न मिल सके जिससे कच्चे माल नष्ट हो गये। जूट एवं पटसन के मूल्य 60% से अधिक कम हो गए।

(5) सरकार द्वारा किसानों से लगान कम न करने के कारण उनकी स्थिति अत्यधिक दयनीय हो गई।

अथवा

जोसेफ मेजिनी (मेत्सिनी) एक इतावली क्रांतिकारी, पत्रकार और कार्यकर्ता थे, जिनका इटली के एकीकरण में अभूतपूर्व योगदान रहा। इनका जन्म 1807 में जेनेवा में हुआ था। उनका मानना था कि ईश्वर की मर्जी के अनुसार राष्ट्र ही मनुष्यों की प्राकृतिक इकाई है। अतः उन्होंने खुलकर राजतंत्र का विरोध और लोकतांत्रिक प्रजातंत्र का समर्थन किया। उनका मानना था कि युवा पीढ़ी को महत्व प्रदान

करके ही हम राष्ट्र की संकल्पना को पूर्ण कर सकते हैं। उन्होंने गणतंत्रात्मक राज्यव्यवस्था के तहत इटली के एकीकरण के लिए 'यंग इटली' नामक संगठन बनाया।

अतः इटली के एकीकरण का श्रेय मेजिनी, गैरीबाल्डी और काउण्ट कावूर को दिया जाता है।

2. भारतीय संविधान सभा ने भारत के लिए संघीय शासन व्यवस्था को अपनाया। संघीय शासन व्यवस्था में सर्वोच्च सत्ता केन्द्रीय प्राधिकार और उनकी विभिन्न आनुषंगिक इकाइयों के मध्य विभाजित होती है। आमतौर पर संघीय व्यवस्था में दो स्तर पर (केन्द्रीय व राज्य) सरकारें होती हैं।

संघीय व्यवस्था की महत्वपूर्ण विशेषता-

(1) यहां सरकार दो से अधिक स्तरों वाली होती है- जैसे भारत में केन्द्र व राज्य के साथ-साथ पंचायत स्तर पर भी कुछ अधिकार दिये गये हैं।

(2) संविधान की सर्वोच्चता

(3) अलग-अलग स्तर की सरकारें एक ही नागरिक समूह पर शासन करती हैं पर कानून अपने, कर वसूलने और प्रशासन का उनका अपना-अपना अधिकार-क्षेत्र होता है।

(4) सर्वोच्च न्यायालय की सर्वोच्चता अर्थात विभिन्न स्तर की सरकारों के बीच अधिकारों के विवाद की स्थिति में सर्वोच्च न्यायालय निर्णायक की भूमिका निभाता है।

अथवा

संघीय सिद्धांतकार 'के.सी. व्हीयर' (K.C. Wheare) ने भारतीय संविधान को उसकी प्रकृति के आधार पर अर्द्ध-संघीय (Quasi-federal) तथा 'सत पाल पंजाब राज्य एवं अन्य' (1969) मामले में सर्वोच्य न्यायालय ने भारतीय संविधान को अर्द्ध-संघीय माना। अर्द्ध-संघीय व्यवस्था से तात्पर्य केन्द्र को राज्य की तुलना में अधिक शक्ति का प्राप्त होना।

अनुसूची 7 में केन्द्र को राज्य की तुलना में अधिक अधिकार का प्राप्त होना, एकल नागरिकता का प्रावधान, राज्यपाल का केन्द्र सरकार द्वारा नियुक्त किया जाना जिसका कि समय-समय पर राजनीतिक लाभ के लिए उपयोग करना, एकीकृत न्यायपालिका व्यवस्था अर्थात अन्य न्यायालय को प्रदानुक्रम की दृष्टि से भारत के सर्वोच्च न्यायालय के अन्तर्गत रखा गया है। अतः उपर्युक्त कारणों के आधार पर भारत की संघीय व्यवस्था की आलोचना की जाती है।

3. हमारे पर्यावरण में उपलब्ध प्रत्येक वस्तु जो मानवीय आवश्कताओं को पूरा करने में प्रयुक्त की जा सके तथा आर्थिक रूप से संभाव्य और सांस्कृतिक रूप से मान्य हो संसाधन कहलाता है। संसाधन मानव के जीवन यापन के लिए तथा जीवन की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए अति उपयोगी होते है।

संसाधनों के अंधाधुंध उपयोग से निम्नलिखित समस्याएं उत्पन्न हो रही है-

(1) कुछ व्यक्तियों के लालचवश, संसाधनों का अत्यधिक ह्रास हो रहा है।

(2) संसाधनों पर कुछ ही व्यक्तियों का केन्द्रीयकरण होता जा रहा है, जिससे समाज, अमीर एवं गरीब वर्ग में बट जा रहा है।

(3) संसाधनों के अंधाधुध उपयोग (शोषण) के कारण वैश्विक पारिस्थितिकी संकट पैदा हो गया है जैसे भूमण्डलीय तापन, ओजोन परत का क्षरण (अवक्षय), पर्यावरण प्रदूषण, भूमि निम्नीकरण और वर्षा चक्र में परिवर्तन।

(4) संसाधनों के दोहन से सामाजिक तनाव, राष्ट्रीय सुरक्षा में चुनौती तथा अन्य देशों पर निर्भरता में वृद्धि हो रही है।

अथवा

वाणिज्यिक कृषि (व्यापारिक कृषि), खेती करने का एक प्रकार है, जिसमें फसलों का मुख्य रूप से व्यावसायिक उपयोग या लाभ की दृष्टि से उत्पादन किया जाता है।

(1) वाणिज्यिक कृषि में बड़ी भूमि, मशीनों का उपयोग और आधुनिक तकनीकों का प्रयोग किया जाता है।

(2) इसमें अधिक पैदावार देने वाले बीजों तथा रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के प्रयोग से उच्च पैदावार प्राप्त किया जाता है।

(3) जीवन निर्वाह कृषि (परंपरागत कृषि) के विपरीत वाणिज्यिक कृषि में आनुवंशिक रूप से संशोधित फसलों तथा उचित सिंचाई प्रणालियों का उपयोग होता है।

(4) वाणिज्यिक कृषि में भूमि पर खेती के साथ-साथ पशुपालन या बागवानी भी किया जाता है।

रोपण कृषि भी एक प्रकार की वाणिज्यिक खेती है। इस तरह के कृषि में लम्बे-चौड़े क्षेत्र में एकल फसल बोई जाती है।

4. रोजगार की परिस्थितियों के आधार पर आर्थिक गतिविधियों को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है-

(1) संगठित क्षेत्रक।

(2) असंगठित क्षेत्रक।

संगठित क्षेत्र- इसके अन्तर्गत वे उद्यम या कार्यस्थल आते हैं, जहां रोजगार की अवधि, कार्य का समय नियमित होता है। ये क्षेत्रक सरकार द्वारा पंजीकृत होते है। इन्हें सरकारी नियमों और विनियमों का पालन करना होता है। जैसे- बैंक, प्रेस आदि।

असंगठित क्षेत्र- असंगठित क्षेत्र छोटी-छोटी और बिखरी हुई इकाइयों से निर्मित होती है। इनमें रोजगार की भारी अनिश्चितता होती है। रोजगार में कोई संरक्षण नहीं होता है। जैसे- चाय की दुकान, रेहड़ी पटरी वाले दुकानदार आदि।

अथवा

उपभोक्ता जागरूकता से तात्पर्य बाजार में क्रेता (खरीददार) को वस्तुओं, उत्पादों व सेवाओं को लेकर सर्वोत्तम विकल्प चुनने का तथा जानकारी प्राप्त करने का अधिकार हो, जिससे उपभोक्ता आदर्श निर्णय ले सके।

भारत में उपभोक्ताओं की सुरक्षा तथा जागरूकता के लिए भारत सरकार ने उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम 1986 को मंजूरी प्रदान की।

उपभोक्ता जागरूकता के उपाय-

1. **सूचना का अधिकार (2005)**- उपभोक्ताओं के पास उत्पादों या सेवाओं की गुणवत्ता, मानक और लागत का उचित डेटा प्राप्त करने का अधिकार होना चाहिए।
2. **चुनाव व सुने जाने का अधिकार**- ग्राहकों की शिकायतों के लिए उचित प्राधिकरण का गठन करके।
3. स्कूलों एवं कॉलेजों में 'ग्राहक शिक्षा का अधिकार' विषय शामिल करके।
4. ग्राहकों की सुविधा के लिए सरल कानून बनाकर तथा उन्हें सुरक्षा का अधिकार उपलब्ध कराके उपभोक्ता जागरूकता बढ़ायी जा सकती है।

(वर्णनात्मक - II)

5. लोकतंत्र- सरल शब्दों में कहें तो लोकतंत्र शासन का एक रूप है, जिसमें जनता शासकों का चुनाव करती है अर्थात् लोकतंत्र का मतलब लोगों का शासन से है।

लोकतंत्र अपने निम्नलिखित विशेषताओं/गुणों के कारण एक उत्तरदायी, जिम्मेवार एवं वैध शासन माना जाता है।

(1) लोकतंत्र में अंतिम निर्णय लेने का अधिकार (शक्ति) लोगों के द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों के पास होता है।

(2) लोकतंत्र निष्पक्ष और स्वतंत्र चुनावों पर आधारित होता है, जिससे सत्ता में बैठे लोगों के लिए जीत-हार के समान अवसर उपलब्ध होता है।

(3) लोकतंत्र राजनैतिक समानता के बुनियादी सिद्धांतो पर अधारित है अर्थात लोकतंत्र में हर वयस्क नागरिक के वोट का एक समान वोट (मूल्य) होता है। अतः भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में किसी भी वयस्क नागरिक को लिंग, आय, धर्म, जाति या अन्य किसी आधार पर उसके वोट के मूल्य को कम या ज्यादा नहीं किया जाता है।

(4) एक लोकतांत्रिक सरकार संवैधानिक कानूनों और नागरिक अधिकारों द्वारा खींची लक्ष्मण रेखाओं के भीतर ही काम करती है अर्थात ये सरकार जनता के प्रति उत्तरदायी होती है और संविधान के तहत ही कार्य करती है।

अतः हम कह सकते है लोगों की जरूरत के अनुरूप आचरण करने के मामले में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली किसी अन्य शासन प्रणाली से बेहतर है। लोकतंत्र अपने उपर्युक्त गुणों (जवाबदेहिता, निष्पक्ष चुनाव, समान अवसर आदि) के कारण एक उत्तरदायी, जिम्मेदार एवं वैध शासन प्रणाली है।

अथवा

एक ऐसी प्रक्रिया जिसमें आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक स्तर पर राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं के साथ एकीकरण वैश्वीकरण कहलाता है। अन्य शब्दों में कहे तो विभिन्न देशों के बीच परस्पर सम्बंध और तीव्र एकीकरण की प्रक्रिया ही वैश्वीकरण है।

वैश्वीकरण में प्रौद्योगिकी की भूमिका-

प्रौद्योगिकी में तीव्र उन्नति वह मुख्य कारक है, जिसे वैश्वीकरण की प्रक्रिया को तीव्र रूप से उत्प्रेरित किया। जैसे- प्रौद्योगिकी के विकास से विगत पचास वर्षों में परिवहन के क्षेत्र में बहुत उन्नति हुई। रेल, नौपरिवहन, वायुयान के विकास ने दो देशों के मध्य वस्तुओं की तीव्रतर आपूर्ति को कम लागत पर सम्भव किया। बड़े-बड़े कंटेनर के विकास से ढुलाई-लागत में भारी बचत हुई और माल को बाजारों तक पहुँचाने की गति में वृद्धि हुई।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी अर्थात दूरसंचार, कम्प्यूटर और इंटरनेट के तीव्र विकास ने विश्व भर में एक-दुसरे से सम्पर्क करने, सूचनाओं को तत्काल प्राप्त करने तथा दूर-दराज के क्षेत्रों में भी सेवाओं की पहुंच उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

जैसे-

(1) भारत में बैठे किसी डॉक्टर का अमेरिका में सेवा प्राप्त करना।

(2) संचार प्रौद्योगिकी के द्वारा लंदन में प्रकाशित समाचार, पत्रिका को प्रयागराज में बैठे किसी व्यक्ति द्वारा पढ़ना।

(3) प्रौद्योगिकी के विकास से ही इसरो द्वारा अमेरिका, जापान, सिंगापुर जैसे देशों के उपग्रह को अंतरिक्ष में ले जाना।

अतः प्रौद्योगिकी के विकास ने वैश्वीकरण की प्रक्रिया को एक तीव्रता प्रदान की।

6. चुनाव प्रक्रिया लोकतंत्र का एक महत्वपूर्ण अंग है। भारत विविधताओं से भरा देश है, जिसमें विभिन्न समुदायों, जातियों, धर्मों के लोग रहते है। भारत में करोड़ो लोग वोट देकर प्रत्यक्ष तौर पर अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करते है। बदलते चुनावी माहौल के कारण विभिन्न राजनीतिक प्रत्याशी/दल अपनी-अपनी जीत को सुनिश्चित करने के लिए तथा लोगों को अपनी तरफ आकर्षित करने के लिए विभिन्न तौर-तरीके अपनाये जाते है। उनमें से जाति को मुद्दा बनाना एक है।

जब पार्टियां चुनाव के लिए उम्मीदवारों के नाम तय करती है। तो चुनाव क्षेत्र के मतदाताओं की जातियों का ध्यान रखती है। कई बार राजनीतिक पार्टियां और उम्मीदवार समर्थन प्राप्त करने के लिए जातिगत भावनाओं को उकसाते है और उसका लाभ प्राप्त करते है।

इस सब के बावजूद साक्षरता और शिक्षा का विकास करके, आर्थिक विकास, शहरीकरण, गांवों में जमीदारीं व्यवस्था का उन्मूलन करके, पेशा चुनने की आजादी, बेमेल विवाह, राजनीतिक जागरूकता एवं चुनाव आयोग तथा संवैधानिक प्रयासों द्वारा जातिगत राजनीति को कम किया जा सकता है।

अतः स्पष्ट है कि चुनाव में जाति की भूमिका महत्वपूर्ण होती है किन्तु दूसरे अन्य कारक भी इतने ही महत्वपूर्ण होते है।

अथवा

स्थानीय स्वशासन- सार्थक भागीदारी और उद्देश्यपूर्ण जवाबदेही ही लोकतंत्र का मूल है। जीवंत और मजबूत स्थानीय शासन भागीदारी और जवाबदेही दोनों को ही सुनिश्चित करता है। अगर सरल शब्दों में कहें तो गांव और जिला के स्थानीय लोगों को शासन में भागीदारी ही स्थानीय स्वशासन को जन्म देता है।

स्थानीय सरकार का क्षेत्राधिकार एक विशेष क्षेत्र तक सीमित होता है और जो उस क्षेत्र के विशेष निवासी है, उन्हीं के लिए कार्य करता है। 73वां संविधान संशोधन, 1992 और 74वां संविधान संशोधन, 1992 द्वारा स्थानीय स्वशासन को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया।

स्थानीय स्वशासन के गुण

(1) इसके द्वारा शासन में समाज के अंतिम व्यक्ति की भागीदारी सुनिश्चित होती है, जिससे सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों के नागरिक भी लोकतंत्रात्मक संगठनों में रूचि लेते हैं।

(2) महिलाओं को कम से कम एक-तिहाई आरक्षण प्रदान करने से महिलाएँ भी मुख्य धारा में शामिल होती हैं।

(3) इसके द्वारा केन्द्र एवं राज्य सरकारों के मध्य स्थानीय समस्याओं को विभाजित कर उनका अधिक प्रभावी तरीके से समाधान किया जा सकता है।

(4) यह जमीनी स्तर पर लोगों में नियोजन और संसाधनों के बेहतर प्रबंधन की भावना पैदा करने में मदद करती है।

(5) स्थानीय लोग स्थानीय समस्याओं की बेहतर समझ रखते हैं।

दोष-

(1) **वित्त की कमी**- कई बार स्थानीय सरकारों को दिया गया धन उनकी मूलभूत जरूरतों के लिए प्रर्याप्त नहीं होता।

(2) कर्मचारियों एवं बुनियादी ढ़ाचे की कमी जैसे मुद्दे स्थानीय निकायों का कामकाज में बाधा डालते हैं।

(3) सरकारी संस्थाओं एवं पंचायत स्तर पर समन्वय की कमी आदि।

7. मृदा अपरदन- पृथ्वी के पृष्ठ पर दानेदार कणों के आवरण की पतली परत मृदा कहलाती है। विभिन्न प्राकृतिक या मानव-प्रेरित कारकों द्वारा मृदा की ऊपरी परत का क्षरण होना मृदा अपरदन कहलाता है, इस परिघटना से मृदा के पोषक तत्वों का ह्रास होता है।

भारत में मृदा अपरदन के प्रमुख प्रकार

(1) **जल अपरदन**- यह जल की क्रिया के कारण होता है जैसे-तेज वर्षा, अपवाह, नदियां आदि। इसके परिणामस्वरूप नालियों का सबसे व्यापक और गम्भीर प्रकार है।

(2) **वायु अपरदन**- शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में वायु की क्रिया से होने वाला अपरदन। इससे भारत पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी भागों (थार का रेगिस्तान) में बड़े-बड़े रेत के टीले बन जाते हैं।

(3) **हिम अपरदन**- इस प्रकार का अपरदन ग्लेशियरों में होने वाली गति के कारण होता है, जिससे चट्टानों और मृदा में कटाव और विघटन होता है। U- आकार की घाटियाँ, मोरेन आदि इसके स्वरूप है।

(4) **तटीय कटाव**- यह समुद्र तट पर लहरों, ज्वार-भाटा, धाराओं आदि से होने वाली क्रिया के कारण होता है। भारत के पूर्वी और पश्चिमी तटों पर इस तरह का अपरदन होता है।

(5) **मानव जनित कारण**- मानव द्वारा भूमि का अत्यधिक दोहन, वनोन्मूलन, अतिचारण, वर्षा दोहन, अविवेक पूर्ण कृषि, अनुचित सिंचाई, जनन, उत्जनन, निर्माण गतिविधियाँ, शहरीकरण, औद्योगीकरण आदि मृदा अपरदन के अन्य कारण है।

अथवा

संसाधन- प्रत्येक वस्तु जिसका उपयोग आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हो तथा जिसकी अपनी एक उपयोगिता और मूल्य हो, उसे संसाधन कहते हैं।

भू-संसाधन- पृथ्वी पर लगभग 70 प्रतिशत जल एवं 30 प्रतिशत स्थल भाग है। मानवीय जरूरतों को पूरा करने के लिए भूमि की अपनी उपयोगिता एवं मूल्य है। आज कृषि से लेकर भवन निर्माण, चारागाह, परिवहन के लिए मार्गों का निर्माण, स्कूल की इमारत, क्रीड़ा स्थल, बड़ी-बड़ी कम्पनियां, सिनेमाहाल आदि के लिए भूमि की आवश्यकता है। लेकिन भूमि एक स्थिर संसाधन है अर्थात लोगों की आवश्यकता है। लेकिन भूमि एक स्थिर संसाधन है अर्थात लोगों की आवश्यकता तो दिन-रात बढ़ती जा रही है, लेकिन भूमि एक निश्चित सीमा में उपलब्ध है, इस कारण आज भूमिका उपयोग (सतत विकास की दृष्टि से) आज चुनौतीपूर्ण होता जा रही है।

भूमि उपयोग और इसमें होने वाले परिवर्तन का किसी क्षेत्र के पर्यावरण और पारिस्थितिकी पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। भारत में पहली बार वर्ष 1988 में एक राष्ट्रीय भूमि उपयोग नीति बनाई गयी।

भूमि उपयोग परिवर्तन हेतु प्रमुख उपाय

(1) भूमि के उपयोग का विस्तृत और वैज्ञानिक सर्वेक्षण कराना।

(2) वन नीति के तहत 33.3% भूमि पर वनावरण स्थापित करना।

(3) गैर-कृषि योग्य भूमि के क्षेत्र में बढ़ोत्तरी को रोकना।

(4) बंजर भूमि का विकास कर उसे कृषि योग्य बनाना।

8. वैश्वीकरण- विभिन्न देशों के मध्य परस्पर सम्बन्धों (सामाजिक, राजनीति और सांस्कृतिक) का और आर्थिक गतिविधियों का तीव्र एकीकरण की प्रक्रिया वैश्वीकरण कहलाती है।

वैश्वीकरण को सम्भव बनाने वाले कारक-

(1) **उदारीकरण की प्रक्रिया**- सरकार द्वारा अवरोधों अथवा प्रतिबन्धों को हटाने की प्रक्रिया को उदारीकरण कहा जाता है। सरकारों द्वारा आयात शुल्क में कमी, विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए श्रम कानूनों को लचीलापन बनाना वैश्वीकरण की प्रक्रिया को गति प्रदान की।

(2) **सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का विकास**- प्रौद्योगिकी की विकास के विगत पचास वर्षों में परिवहन सेवा आदि क्षेत्रों में तीव्र विकास लाकर वैश्वीकरण की गति को बल प्रदान किया।

(3) **डिजिटल क्रांति**- इंटरनेट ने दुनिया में कहीं से भी उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं तक पहुंच आसान बना दी जैसे- फ्लिपकार्ड एवं अमेजॉन जैसे प्लेटफार्म

(4) **अन्तरराष्ट्रीय आर्थिक एकीकरण**- ब्रिक्स, G-20, G-7, नाफ्टा, आसियान जैसे समूहों के गठन ने वैश्वीकरण के विचार को आसान बनाया।

(5) **सामाजिक-सांस्कृतिक अभिसरण**- ऑनलाइन समाचार पत्रों और सोशल मीडिया के चलते लोगों की सांस्कृतिक पहचान की सीमा बदलती और बढ़ती जा रही है, जिससे जो पहले राष्ट्रीय/क्षेत्रीय उत्पाद थे वे आज एक वैश्विक उत्पाद हो गये। जैसे- खाना, विभिन्न कपड़े।

(6) **सीमा पार राजनीतिक प्रभाव**- सरकारों ने ऐसी नीतियाँ बनाई है, जो सीमा पार व्यापार और प्रभाव को सुविधाजनक बनाती है- जैसे अफ्रीका महाद्वीप, पश्चिम एशिया में विभिन्न देशों का निवेश।

अतः उपर्युक्त कारक वैश्वीकरण की प्रक्रिया को सम्भव बनाने में सहायक सिद्ध हुई।

अथवा

संगठित क्षेत्रः- संगठित क्षेत्र मूलतः सरकार के यहां/साथ पंजीकृत कम्पनी या कोई व्यवसाय होता है, जो सरकार के दिशानिर्देशों और विनियमों का पालन करते हैं। संसाधन की दृष्टि से संगठित क्षेत्र आमतौर पर विनिर्माण व्यवसायों, सेवा व्यवसायों और खुदरा व्यवसायों से बना होता है।

असंगठित क्षेत्र- असंगठित क्षेत्र उन व्यवसायों से बना है, जो सरकार के साथ पंजीकृत नहीं होते और सरकार द्वारा बनाये दिशानिर्देशों और विनियमों का पालन नहीं करते है या नाम मात्र का

करते हैं। असंगठित क्षेत्र के कर्मचारी कम कुशल एवं उत्पादक होते हैं। इनकी बाजार तक पंहुच संगठित क्षेत्र की तुलना में कम होती है। भारत में कुल कार्यबल का लगभग 90% असंगठित कामगार हैं।

असंगठित कर्मकार सामाजिक सुरक्षा अधिनियम, 2008 में असंगठित कर्मकार को घर से काम करने वाले कर्मी, स्वरोजगार में लगे लोग या असंगठित क्षेत्र में मजदूरी करने वाले लोगों को मजदूरों के रूप में परिभाषित किया गया है।

असंगठित क्षेत्र के कर्मचारियों की समस्या-

असंगठित क्षेत्र के कर्मचारियों (कामगार) के नियोजन में मौसमी और अनिश्चित रोजगार (जैसे- कृषि कामगार, दस्तकार), अलग-अलग कार्यस्थल (जैसे- बंधुआ मजदूर), नियोक्ता- कर्मचारी सम्बन्ध का अभाव, कार्यस्थल पर प्रतिकूल स्थितियां, अनिश्चित और लम्बे कार्य घंटे और कम पारिश्रमिक (वेतन) आदि। इस क्षेत्र की प्रमुख समस्याएँ है।

(मानचित्र सम्बन्धी प्रश्न)

निर्देश: प्रश्न संख्या 9(A) तथा 9(B) मानचित्र से संबंधित है।

9(A).

(i) वह स्थान जहाँ नील की खेती करने वाले किसानों का आंदोलन हुआ था।

(ii) वह स्थान जहाँ नील की खेती करने वाले किसानों ने सत्याग्रह आंदोलन किया था।

(iii) वह स्थान जहाँ पर काँग्रेस के अधिवेशन में 'पूर्ण स्वराज' की माँग की गई थी।

(iv) वह स्थान जहाँ पर सूती मिल श्रमिकों ने सत्याग्रह आंदोलन किया था।

(v) वह स्थान जहाँ दिसम्बर 1920 में काँग्रेस का अधिवेशन हुआ था।

9.(B).

(i) गेहूँ का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य ⊙ चिन्ह द्वारा नाम सहित।

(ii) कपास उत्पादन का एक प्रमुख क्षेत्र ▨ चिन्ह द्वारा नाम सहित।

(iii) मूँगफली का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य ○ चिन्ह द्वारा नाम सहित।

(iv) एक परमाणु ऊर्जा केन्द्र ⊕ चिन्ह द्वारा नाम सहित।

(v) खनिज तेल का सबसे ज्यादा उत्पादन वाला राज्य (y) चिन्ह द्वारा नाम सहित।

(केवल दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिये मानचित्र कार्य के विकल्प के रूप में)

9(A). निर्देश: निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए। मानचित्र का प्रयोग न कीजिए।

(i) चाम्पारण (बिहार)
(ii) चाम्पारण (बिहार)
(iii) लाहौर (पाकिस्तान)
(iv) अहमदाबाद (गुजरात)
(v) नागपुर (महाराष्ट्र)

9(B). निर्देश : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अपनी उत्तर-पुस्तिका में लिखिए। मानचित्र का प्रयोग न कीजिए।

(i) उत्तर प्रदेश
(ii) गुजरात
(iii) गुजरात
(iv) नरौरा (उत्तर प्रदेश)
(v) राजस्थान